# Tazkira

(Quarterly)

تذکرہ

(سہ ماہی)

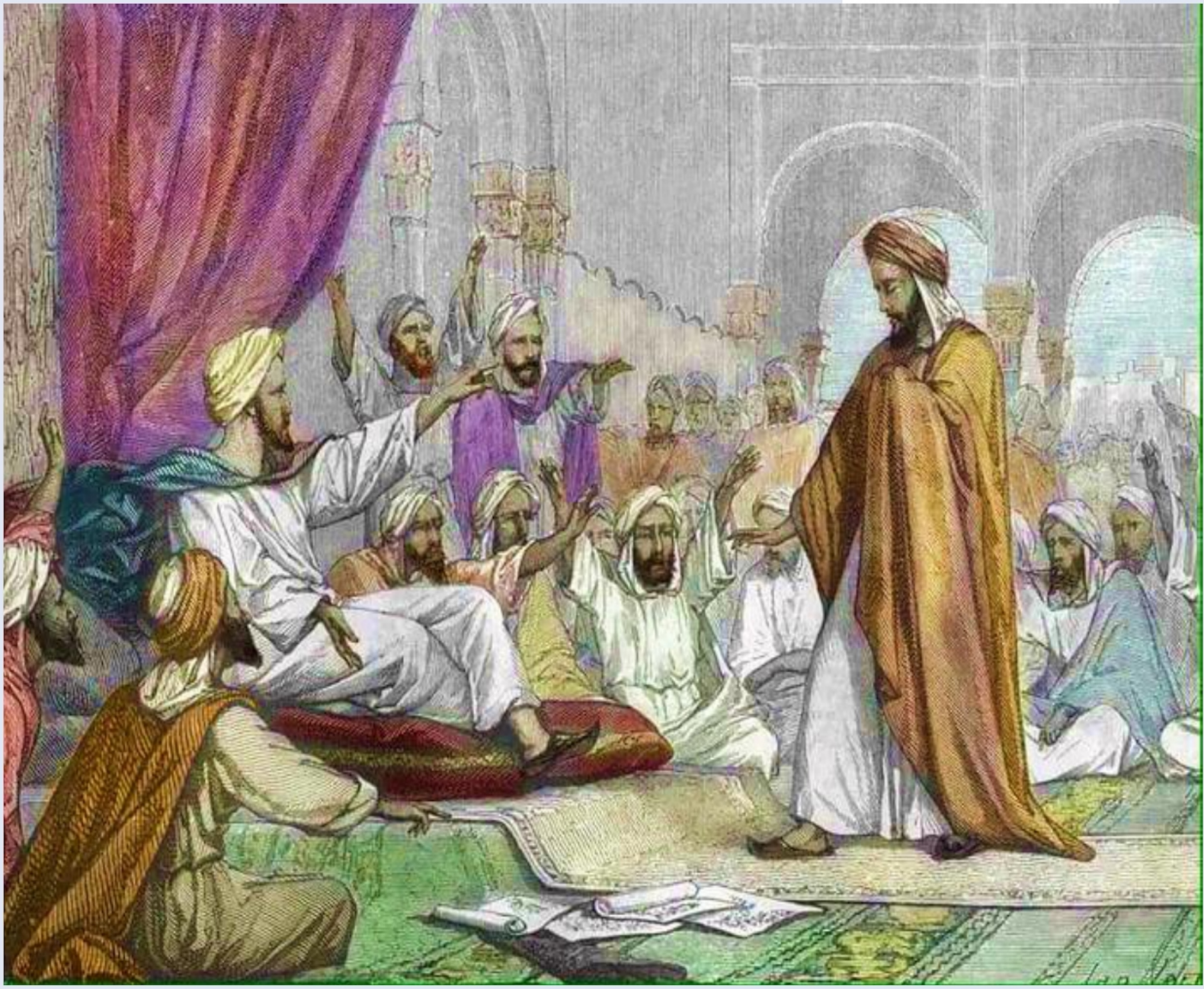

सितंबर 2024 - नवम्बर 2024 / वर्ष -1 अंक -1

T
A
Z
K
I
R
A

# تذکرہ

(سہ ماہی)

**अंक-1, वर्ष-1 (प्रवेशांक)**

प्रधान संपादक: असग़र मेहदी

संपादक: फ़रज़ाना महदी

संपादक (कला एवं संस्कृति): शहज़ाद रिज़वी

संपादक मण्डल: नदीम हसनैन,
राकेश कुमार मिश्र,
कौशल किशोर,
डॉ. बिभाष कुमार श्रीवास्तव
वीरेंद्र त्रिपाठी, (क़ानूनी सलाहकार)
अलीज़ा मेहदी,
ज़ाहिद ख़ान

लेज़र टाइप सेटिंग: डीप इंक, लखनऊ

मूल्य: एक प्रति ₹ 100.00

संपर्क: फ़र्स्ट फ़्लोर सी बी चैंबर्स, वी मार्ट के सामने, तहसीन गंज
तिराहा, हरदोई रोड, लखनऊ 226003

फ़ोन नंबर : 9792577777, 9984154059, 9415692469

ई-मेल: asgharmehdi15@gmail.com, farzanamahdi22@gmail.com
shahzadrizvi1961@gmail.com

**समस्त क़ानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश होगा।**

# अनुक्रम


संपादकीय 4

इज़हार 9

**विमर्श**

मुताज़िला: इस्लाम में तर्क और इस्तदलाल की धाराओं का उरुज और ज़वाल: भाग -1 28

*असग़र मेहदी*

भारत संकल्पना और अमीर ख़ुसरो 52

*राकेश कुमार मिश्रा*

हाई-क्लास कल्चर के पहरेदार 64

*फ़रज़ाना महदी*

जाति धर्म का अनुपात 74

*सीमा आज़ाद*

चुनाव नतीजे – 2024 के मायने 76

*रफ़त फ़ातिमा*

कश्मीर चुनाव से उम्मीदें 87

*लाल बहादुर सिंह*

"लव जिहाद" का गोयबेल्सी प्रचार और आरएसएस का फ़र्ज़ी "जनसंख्या विज्ञान" 94

*सत्यप्रकाश*

**अदब व साहित्य : कहानी**

कुंजड़-क़साई 114

*अनवर सुहैल*

गाओ मेरी बुलबुल, गाओ 126

*अबुल हसन अली अकबरज़ादा*

**कविता/नज़्म**

अनवार अब्बास (उर्दू) 141

स्वप्निल श्रीवास्तव 148

कौशल किशोर 152

कात्यायनी 161

भगवान स्वरुप कटियार 166

अनूप मणि त्रिपाठी 170

**कला एवं संस्कृति**

चचा जान, सादक़ैन 172

*सुलतान अहमद नक़वी*

आधुनिक रंगमंच में लोक की पुनर्प्रतिष्ठा करने वाले नाटककार हबीब तनवीर 186

*ज़ाहिद ख़ान*

**पुस्तक समीक्षा**

ओपेन टू रीज़न : सुलेमान बशीर डायग्ने 200

*समीक्षा : असग़र मेहदी*

फ़िलिस्तीनी कविताएं 'घर लौटने का सपना' 225

*कौशल किशोर*

'सफ़र की तौहीन' पर दो एक बातें 237

*मालिक-ए-अश्तर*

# संपादकीय

बर्नार्ड लेविस ने फ़्रैन्सिस फ़ुकुयामा की थ्योरी The End of History में प्रस्तुत दृष्टिकोण को नए फ़्रेम में पेश करते हुए Return of Islam के नाम से एक मोनोग्राफ़ लिखा फिर इसे नई शक्ल देकर The Roots of Muslim Rage के नाम से मासिक पत्रिका Atlantic में छापा। जिसके आधार पर सभ्यताओं के संघर्ष (Clash of Civilisation) की धारणा को पश्चिम और इस्लाम के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। लेकिन इस धारणा को Samuel P Huntington से ही जोड़े जाने का रिवाज है जिसने 1993 -96 में Foreign Affairs में अपने लेख में और उसके बाद अपनी पुस्तक 'The Clash of Civilisation and the Remaking of World Order' में इस्लाम को conflict prone civilisation के रूप में साबित करने की चेष्टा की। संक्षेप में Huntington की थीसस यह है कि भविष्य में 'संघर्ष' सभ्यताओं के दरमियाँ होंगे, क्योंकि उसके अनुसार सभ्यतायें भाषा, इतिहास, धर्म, और इस प्रकार की दूसरी objective संस्थाओं तथा लोगों के self-identification जैसे सब्जेक्टिव तत्वों से परिभाषित होती हैं। हम देखते हैं कि स्पष्ट रूप से धर्म भी एक आधार है लेकिन Clash of Civilisation की theory में केवल इसे ही प्रमुखता दी जा रही है। Huntington सुझाव देते हैं कि धर्मिक शिगाफ़ (cleavage) का दायरा बढ़ेगा क्योंकि एक ही समुदाय और धर्म के मानने वालों के मध्य सम्पर्क और इंटरैक्शन बढ़ रहा है। Huntington के अनुसार स्थानीय पहचान, परम्पराएँ और सम्बंध कमज़ोर हो रहे हैं, जिसके परिणाम

स्वरूप धर्म आधारित व्यापक शिनाख़्त की धाराएँ मज़बूत हो रही हैं। Huntington की Clash Theory के प्रतिवाद और खंडन में बहुत लिखा गया है और सिद्ध किया गया कि 'संघर्ष' के कारण केवल प्राचीन सभ्यताओं और धर्मों के अंतर में निहित नहीं हैं बल्कि समान रूप से वही कारक ज़िम्मेदार हैं जो आधुनक विश्व और इसकी आधुनिकता को प्रभुत्व प्रदान करते हैं।

इस्लाम के कट्टर समर्थक और इसके घोर विरोधी वर्गों में आम तौर पर यह धारणा रहती है इस्लाम धार्मिक मान्यताओं और संस्कृति व उससे जुड़े मूल्य गत 1400 वर्षों से अपरिवर्तित रहे हैं। यह एक अतार्किक और अवैज्ञानिक सोच है। इस प्रकार की समस्त धाराएँ अपने प्रयासों में कुछ विशेष हासिल तो नहीं कर पातीं लेकिन एक अलगाववादी वातावरण के निर्माण में योगदान देती ज़रूर नज़र आती हैं। इसके अतिरिक्त एक और तथ्य की ओर संकेत करना है कि पश्चिम की नीतियों, सेक्युलरिज़म, लोकतंत्र, आधुनिकता जैसी संस्थाओं के प्रति मुस्लिम दुनिया की सोच और अप्रोच भी एक ही स्थान और समय पर मोनोटोनस नहीं रही है। इसके अतिरिक्त कट्टरपंथ जैसे किसी आंदोलन पर इस्लामी परम्परा की ही इजारेदारी भी नहीं रही है। अन्य धर्मों के समान इस्लाम में भी अधिक सहिष्णु, ज्ञानोन्मुखी परम्परायें 1400 साल से सक्रिय रही हैं। जिनकी उपलब्धियों पर विमर्श और चर्चा नहीं होती, जो कभी कमज़ोर तो कभी प्रबल होकर मानव सभ्यता के विकास में मज़बूत योगदान करती रही हैं।

उपरोक्त के आलोक में आज बेहद ज़रूरी है कि मुस्लिम दुनिया की महान उपलब्धियों, कमियों या ख़ामियों पर समग्र विमर्श के दरवाज़े खोले जायें। इस सम्बंध में